इकाई-3

प्रश्न 1. 'प्रेम एक सम्पूर्ण मूल्य है।' संक्षेप में बतायें।

उत्तर—प्रेम को सम्पूर्ण मूल्य कहा जाता है क्योंकि यह सभी मनुष्यों से संबंधित भावना है। यह मजबूत स्नेह और व्यक्तिगत लगाव की भावना है। दूसरे शब्दों में, प्यार, माता-पिता, बच्चे या दोस्त के लिए व्यक्तिगत लगाव या गहरे लगाव की भावना है। यह पहचानने के साथ शुरू होता है कि एक-दूसरे इंसान (स्नेह की भावना) से संबंधित है और यह धीरे-धीरे सभी मनुष्यों से संबंधित होने की भावना का विस्तान करता है।

प्रेम शब्द विभिन्न प्रकार की भावनाओं, अवस्थाओं और दृष्टिकोणों को संदर्भित कर सकता है, जिसमें सामान्य सुख ("मुझे वह भोजन पसंद था") से लेकर गहन पारस्परिक आकर्षण तक हो सकता है।

प्रेम की भावना एक अविभाजित समाज की ओर ले जाती है। यह परिवार से शुरू हो कर धीरे-धीरे विश्व परिवार तक फैलती है।

प्रश्न 2. 'न्याय' से आप क्या समझते हैं? न्याय से सद्भाव या सामंजस्य कैसे स्थापित किया जा सकता है?

उत्तर—न्याय के चार तत्त्व है—

1. मूल्यों की मान्यता,
2. पूर्ति,
3. मूल्यांकन,
4. पारस्परिक खुशी सुनिश्चित करना।

जब चारो को सुनिश्चित किया जाता है, तो न्याय सुनिश्चित किया जाता है। पारस्परिक पूर्ति न्याय की पहचान है और सभी रिश्तों में न्याय आवश्यक है। न्याय परिवार से शुरू होता है और धीरे-धीरे विश्व परिवार तक फैलता है। बच्चे को परिवार में न्याय की समझ मिलती है। इस समझ के साथ, वह समाज में बाहर जाता है और लोगों के साथ बातचीत करता है।

अगर परिवार में न्याय की समझ सुनिश्चित की जाती है, तो दुनिया में बड़े पैमाने पर होने वाली सभी क्रियाओं में न्याय होगा। यदि हम रिश्तों में मूल्यों को नहीं समझते हैं, तो हम अपने क्षुद्र पूर्वाग्रहों और परिस्थितियों से नियंत्रित होते हैं। हम लोगों को उनके शरीर (विशेष जाति, या लिंग या जाति या जनजाति) के आधार पर उच्च या निम्न मान सकते हैं, धन के आधार पर या किसी के विश्वास की प्रणाली के आधार पर। यह सब अन्याय का स्रोत है और खंडित समाज की ओर ले जाता है जबकि हमारी प्राकृतिक स्वीकृति अविभाजित समाज और सार्वभौमिक मानव व्यवस्था के लिए है। मानव में सद्भाव की खोज करने के बाद, हम परिवार में सामंजस्य का पता लगाने में सक्षम हैं। यह हमें समाज और प्रकृति/अस्तित्व के स्तर पर सामंजस्य को समझने में सक्षम बनाता है। यह तरीका है, जो हमारे जीवन में सद्भाव बढ़ाता है। हम धीरे-धीरे सभी मनुष्यों के साथ सद्भाव में रहने की क्षमता प्राप्त करते हैं।

प्रश्न 3. सम्मान का अर्थ क्या है? इस भावना की सही समझ न होने के कारण हम दूसरों का अनादर कैसे करते हैं?

उत्तर—सम्मान का अर्थ है, व्यक्तित्व को स्वीकार करना और सही मूल्यांकन करना (जैसा मैं हूँ उसका मूल्यांकन किया जाना)। आज सम्मान के लिए हमारा आधार काफी हद तक हमारी चर्चा के विपरीत है। सम्मान के आधार पर समानता या सही मूल्यांकन में से एक होने के बजाय, हमने इसे किसी ऐसी चीज के आधार पर बनाया है जिसके आधार पर हम अंतर करते हैं अर्थात् किसी का सम्मान करते हुए आप उसके लिये आप कुछ विशेष कर रहे हैं, क्योंकि वह विशेष है या कुछ विशेष स्थिति में है। इसी प्रकार, हम सभी कुछ, विशेष बनने की कोशिश करके एक-दूसरे से सम्मान पाने के लिए दौड़ रहे हैं।

वास्तविकता यह है कि आज हम सम्मान के नाम पर विभेद कर रहे हैं। हम या तो लोगों को उनके शरीर के आधार पर, उनके धन और संपत्ति के आधार पर यह उनकी मान्यताओं के आधार पर अंतर करते हैं। वर्तमान में सही मूल्यांकन के संदर्भ में सम्मान की कोई धारणा नहीं और ना ही रिश्ते की कोई वास्तविक भावना है। अब केवल एक भेदभाव है।

Scanned with Cam

इस भेदभाव या अन्तरभेद के तीन आधार हैं—

(i) शरीरिक

(ii) भौतिक सुविधाएँ

(iii) मान्यताएँ

(i) शरीर के आधार पर

सेक्स/लिंग—हम इस तथ्य को नजरअंदाज करते हैं कि पुरुष या महिला होना शरीर का एक गुण है, ना कि 'मैं' के स्तर पर एक विशेषता। हम लिंग जिसे पुरुष और महिला कहा जाता है, के आधार पर सम्मान देने में अंतर करते हैं। कई देशो में, लोग एक महिला बच्चे के बजाय एक पुरुष बच्चे को पसंद करते हैं।

जाति—यदि व्यक्ति स्वयं के समान जाति का है, तो हम उनके साथ अलग व्यवहार करते हैं। उदाहरण के लिए, हम त्वचा के रंग के आधार पर अंतर करते हैं—सफेद, भूरा, काला आदि। इस आधार पर कि व्यक्ति आर्य जाति, मंगोलियाई जाति आदि का है हम भेदभाव करते हैं। यहाँ फिर से, हम 'मैं' के आधार पर मूल्यांकन नहीं करते हैं, बल्कि शरीर के आधार पर करते हैं।

आयु—हम देखते हैं कि हम शरीर के स्तर पर मूल्यांकन करते हैं जो उम्र शरीर से संबंधित है, न कि 'मैं' से। जैसे हमें उनका सम्मान करना चाहिए जो उम्र में बड़े हैं।

शारीरिक शक्ति—अगर कोई मजबूत होता है, तो हम उसके विपरीत कुछ नहीं करते। वास्तव में, हम सोचते हैं कि हम दूसरे का सम्मान कर रहे हैं जबकि यह डर है कि अगर हम उनके साथ ऐसा व्यवहार नहीं करेंगे, तो हमें नुकसान होगा।

भौतिक सुविधाओं के आधार पर

धन—हम लोगों को अलग करते हैं क्योंकि कुछ के पास दूसरों की तुलना में अधिक धन है जिसे हम एक "अमीर व्यक्ति" कहते हैं। हम यह भी पता लगाने की जहमत नहीं उठाते कि क्या ऐसे लोग समृद्ध महसूस कर रहे हैं, या उनके पास सिर्फ धन है। इस तरह, हम पहले भौतिक सुविधाओं का अधिक मूल्यांकन कर रहे हैं, जो सिर्फ शरीर की जरूरतों को पूरा करने के लिए हैं।

पद—हम समाज में एक व्यक्ति की स्थिति के आधार पर सम्मान करने की कोशिश करते हैं। किसी व्यक्ति की उत्कृष्टता और विभेदीकरण के निशान के रूप में पद का गलत तरीके से मूल्यांकन किया जाता है। पद को इस आधार पर महत्त्वपूर्ण माना जाता है कि वह अधिक भौतिक सुविधाएँ देता है या इस आधार पर कि कुछ पदों को महत्त्वपूर्ण माना जाता है।

मान्यताओं के आधार पर

इस्म—इस्म का अर्थ है विचार-प्रणाली के संदर्भ में कोई विश्वास जो हमारे पास है, या जिसे हमने अपनाया है। पूँजीवाद, समाजवाद, साम्यवाद इत्यादि जैसे कई आधुनिक इस्में भी हैं और इन मान्यताओं का पालन करने वाले लोगों को पूँजीवादी, समाजवादी, कम्युनिस्ट इत्यादि कहा जाता है। जिन लोगों ने उन्हें अपनाया है या उनका अनुसरण कर रहे हैं, वे बचपन से ही उनके संपर्क में हैं। उनकी मान्यता को सही मानता है। एक मान्यता को मानने वाले दूसरों से हमेशा विरोध में रहते हैं।

संप्रदाय—एक संप्रदाय के लोग केवल एक समान विश्वास प्रणाली वाले लोगों को 'अपना' मानते हैं और सम्मान के योग्य समझते हैं। एक विशेष परंपरा का पालन करना, रिश्ते में सम्मान और अनादर का आधार बन जाता है।

प्रश्न 4. 'भेदभाव रिश्तों में तीखापन लाता है' के बारे में बताएँ। जब हम भेदभाव करते हैं तो क्या समस्याएँ पैदा होती हैं?

उत्तर—सम्बन्धों में भेदभाव के कारण आने वाली समस्याएँ निम्न हैं—

लिंग के आधार पर भेदभाव से समस्यायें—महिलाओं के अधिकारों का मुद्दा। महिलाओं का असमान नीतियों के विरुद्ध विरोध करना, शिक्षा में समानता, नौकरियों में प्रतिनिधित्व में माँग करना आदि।

Scanned with Cam

असुरक्षा व डर की भावना।

जाति के आधार पर भेदभाव से समस्यायें—जातिगत भेदभाव के कारण आंदोलन, ऐसे जातिवाद, नस्लवादी हमले, आदि समाज में कई बार सुनाई पड़ते हैं।

उम्र के आधार पर भेदभाव से समस्यायें—एक तरफ बच्चों के लिए समान अधिकारों और दूसरी और बुजुर्ग लोगों के लिए अधिकारों के लिए माँग, विरोध और आंदोलन आदि।

धन के आधार पर भेदभाव से समस्यायें—वर्ग संघर्ष और वर्ग-भेदभाव के दूर करने के लिए आंदोलन। आत्म-सम्मान की कमी से पीड़ित कई लोग द्वारा आत्महत्या आदि।

पद के आधार पर भेदभाव से समस्यायें—उच्च सरकारी अधिकारियों के खिलाफ विरोध। व्यक्ति के स्तर पर, अवसाद आदि।

इस्म पर आधारित भेदभाव से समस्यायें—अधिक इज्जत पाने में सक्षम होने के लिए एक इस्म से दूसरे इस्म में परिवर्तन।

संप्रदायों के आधार पर भेदभाव से समस्यायें—अनगिनत धर्मों और संप्रदायों के अपना आंदोलन है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि उनके विश्वास के लोगों के साथ कोई भेदभाव न हो। नौकरियों और शिक्षा में विशेष प्रावधानों की माँग आदि।

प्रश्न 5. सम्मान और भेदभाव में क्या अंतर है? इनमें से कौन सा स्वाभाविक रूप से स्वीकार्य है?

उत्तर— **सम्मान और भेदभाव के बीच अंतर**

सम्मान	भेदभाव
1. सम्मान सही मूल्यांकन है।	यह सम्मान की कमी है जो सही मूल्यांकन के ना होने कारण होता है।
2. दूसरों के लिए सम्मान सही मूल्यांकन और समझ से उत्पन्न होता है जिससे रिश्तों में पूर्णता आती है और लोगों में सम्मान की भावना पैदा होती है।	इससे समाज की समस्याओं में वृद्धि होती है। भेदभाव की भावना समाज में किसी एक पक्ष का सम्मान कम करती है।

प्रश्न 6. आप भरोसे से क्या समझते हैं? उदाहरणों के साथ इरादे और क्षमता के बीच अंतर बताइए।

या

जब आप दूसरे को आँकते हैं, तो आप इरादे और क्षमता के बीच अंतर कैसे करते हैं? यह महत्त्वपूर्ण क्यों है?

उत्तर—विश्वास रिश्ते में मूलभूत मूल्य है। "यह आश्वासन कि प्रत्येक मनुष्य स्वाभाविक रूप से स्वयं को और दूसरे को सुखी और समृद्ध बनाना चाहता है" विश्वास के रूप में जाना जाता है। आपसी विश्वास में हम एक-दूसरे पर निर्भर करते हुए एक सामान्य उद्देश्य को प्राप्त कर सकते हैं। यह लोगों की अपेक्षा है कि वे हमारे शब्द पर भरोसा कर सकते हैं। यह रिश्तों में ईमानदारी और निरंतरता के माध्यम से बनाया गया है। इसके दो पहलू हैं—

1. इरादा (हमारी प्राकृतिक स्वीकृति) या आशय
2. क्षमता (करने में सक्षम)

आशय और क्षमता दोनों ही विश्वास के पहलू हैं। इरादा वह है जो हमारी (हमारी प्राकृतिक स्वीकृति) आकांक्षा को बताता है और क्षमता आकांक्षा को पूरा करने की काबिलियत है। इरादे में हर इंसान वही करना चाहता है जो सही हो, केवल क्षमता की कमी हो सकती है जिसे उचित समझ और अभ्यास के माध्यम से विकसित करने की आवश्यकता है। लेकिन आज हम जो कर रहे हैं वह यह है कि जब हम अपने आप को आंक रहे हैं तो हम अपने इरादे के आधार पर फैसला कर रहे हैं, जबकि, जब हम दूसरे को आँकते हैं तो हम उसकी क्षमता (काबिलियत) के आधार पर आँकते हैं।

Scanned with Cam

हम अपने स्वयं के इरादे पर भरोसा करते हैं जबकि हम दूसरों के इरादे पर भरोसा करने के लिए तैयार नहीं है। जबकि यह अन्य के लिए भी समान है। हम पाते हैं कि जब हम अपने इरादे को देखते हैं, तो हम उसके बारे में निश्चित होते हैं, हम दूसरे के इरादे के बारे में सुनिश्चित नहीं होते हैं। हम वास्तव में उनकी क्षमता को देख रहे हैं, और उनके इरादे पर निष्कर्ष निकाल रहे हैं। इसलिए, अविश्वास पैदा होता है और हम रिश्ते से विश्वास खो देते हैं। हम शायद ही कभी अपनी योग्यता और दूसरे के इरादे को देखते हैं।

इरादा और सक्षमता के बीच अंतर करना बहुत महत्त्वपूर्ण है। यदि हमें इरादे पर भरोसा होता है, तो हमें दूसरे से संबंधित होने का अहसास होता है और अगर वह पर्याप्त नही है, तो हम उसकी क्षमता को बेहतर बनाने में मदद कर सकते हैं।

प्रश्न 7. रिश्तों के मूलभूत मूल्य क्या हैं? उन्हें मजबूत और पारस्परिक संबंधों को सुनिश्चित करने के लिए कैसे इस्तेमाल किया जा सकता है?

या

नींव के मूल्य और मानवीय संबंधों में पूर्ण मूल्य को सूचीबद्ध करें। प्रत्येक को एक उदाहरण के साथ समझाइए।

उत्तर—संबंध बनाए रखने में कुछ बुनियादी और महत्त्वपूर्ण मूल्यों की आवश्यकता होती है। ये मूल्य, स्वास्थ्य और खुशहाल पारिवारिक संबंधो की रीढ़ हैं। भावनाओं और सम्मान सभी का वास्तविक महत्त्व है। ये मूल्य दीर्घकालिक आधार पर रिश्ते में खटास व विरोध को खत्म करने और कुल सद्भाव की स्थापना के लिए प्रेरित करते हैं।

(i) विश्वास—विश्वास संबंध में एक मूलभूत मूल्य है। "यह आश्वासन कि प्रत्येक मनुष्य स्वाभाविक रूप से स्वयं को और दूसरे को सुखी और समृद्ध बनाना चाहता है। विश्वास कहलाता है।" यदि हमें दूसरे पर भरोसा है, तो हम दूसरे को एक रिश्तेदार के रूप में देख सकते हैं, न कि एक विरोधी के रूप में।

(ii) सम्मान—सम्मान का अर्थ है व्यक्तित्व का सही मूल्यांकन। यह सम्मान की ओर पहला बुनियादी कदम है। यदि हम महसूस करते हैं कि हम अलग-अलग हैं, तभी हम अपने आप को दूसरों से अलग देख सकते हैं। अन्यथा नहीं। सम्मान का अर्थ है सही मूल्यांकन, जैसा कि मैं हूँ, मुझे वैसा ही समझा जाये।

(iii) स्नहे—स्नेह दूसरे से संबंधित होने की भावना है। स्नेह तब होता है जब मैं पहचानता हूँ कि हम दोनों एक-दूसरे को खुश करना चाहते हैं और हम दोनों समान हैं।

(iv) देखभाल—देखभाल की भावना हमारे किसी रिश्तेदार के शरीर का पोषण और सुरक्षा करने की भावना है। दूसरें शब्दों में मन की एक स्थिति जिसमें दूसरे को सही से रखने हेतु प्रयास किया जाता है।

(v) मार्गदर्शन—किसी दूसरे में सही समझ और भावनाओं को सुनिश्चित करने की भावना को मार्गदर्शन कहा जाता है। हमें सही समझ और भावनाओं के लिए 'मैं' की आवश्यकता को समझना होता है। हमें यह भी समझना है कि दूसरा प्राकृतिक स्वीकृति में मेरे समान है, निरंतर खुशी चाहते हैं और यह सभी चार स्तरों पर सद्भाव में रहने का कार्यक्रम है।

(vi) श्रद्धा—दूसरे की उत्कृष्टता को स्वीकार करने की भावना को श्रद्धा कहा जाता है। जब हम देखते हैं कि किसी दूसरे ने उत्कृष्टता को प्राप्त कर लिया है। (जिसका अर्थ है जीवन को समझने के लिए और खुशियों की निरंतरता सुनिश्चित करने के लिए सभी स्तरों पर सद्भाव में रहना) हम उसके प्रति श्रद्धा की भावना रखते हैं।

(vii) गर्व—हम में से हर एक निरंतर खुशी और समृद्धि के साथ रहना चाहता है। हम में से प्रत्येक के पास प्राकृतिक स्वीकृति है, एक ही लक्ष्य और कार्यक्रम है और हम में यह महसूस करने की समान क्षमता है। गर्व उस व्यक्ति के लिए भावना है जिसने उत्कृष्टता के लिए प्रयास किए हैं।

(viii) आभार—आभार मेरी ओर से उन लोगों के लिए स्वीकृति की भावना है जिन्होंने मेरी उत्कृष्टता के लिए प्रयास किए हैं। आभार एक भावना है जो लोगों में सहायता प्राप्त करने के बाद आती है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि वे स्थिति की व्याख्या कैसे करते हैं।

(ix) प्यार—प्यार मजबूत स्नेह और व्यक्तिगत लगाव की भावना है। दूसरे शब्दों में, प्यार, माता-पिता, बच्चे, दोस्त आदि के लिए गहरे लगाव की भावना है। इस भावना या मूल्य को संपूर्ण मूल्य भी कहा जाता है क्योंकि यह सभी मनुष्यों से संबंधित होने की भावना है। यह पहचानने के साथ शुरू होता है कि एक इन्सान दूसरे इंसान (स्नेह की भावना) से संबंधित है और यह धीरे-धीरे यह सभी मनुष्यों से संबंधित होने की भावना का विस्तार करता है।

Scanned with Cam

प्रश्न 8. व्यापक मानव लक्ष्य प्राप्त करने के लिए कार्यक्रम लिखें। उदाहरण भी दें।

या

समाज में मानव के पाँच आयाम क्या 'मानववादी' सोच के अनुकूल हैं?

उत्तर—व्यापक मानवीय लक्ष्य सही समझ, समृद्धि, निडरता और सह-अस्तित्व हैं। व्यापक मानव लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए आवश्यक कार्यक्रम हैं—

1. शिक्षा-अधिकार (शिक्षा-संस्कार)
2. स्वास्थ्य-स्व नियमन (स्वास्थ्य-संयम)
3. न्याय-संरक्षण (न्याय-सुरक्षा)
4. उत्पादन-कार्य (उत्पादन-क्रिया)
5. विनिमय-भंडारण (विनिमय-कोष)

शिक्षा-सही जीवन—शिक्षा जीवन के सभी चार स्तरों पर सामंजस्य को समझने के लिए होती है और सही रहन-सहन जीवन के सभी चार स्तरों पर सद्भाव में रहने के लिए प्रतिबद्धता और तत्परता को दर्शाता है।

स्वास्थ्य-स्व नियमन—संयम शरीर को पोषण, सुरक्षा और सही उपयोग करने के लिए जिम्मेदारी की भावना है। जब शरीर स्वयं ('मैं') की जरूरतों के अनुसार कार्य करने के लिए होता है, और, शरीर के विभिन्न अंगों के बीच सद्भाव होता है, तो इसे स्वास्थ्य कहा जाता है।

न्याय-संरक्षण—न्याय का तात्पर्य मनुष्य के बीच के संबंधों में सामंजस्य है, जबकि संरक्षण (सुरक्षा) का तात्पर्य मानव और शेष प्रकृति के बीच के संबंध में सामंजस्य से है।

विनिमय-भंडारण—विनिमय समाज के सदस्यों के बीच भौतिक सुविधाओं के आदान-प्रदान को कहते हैं, जबकि भंडारण भौतिक सुविधाओं को सहजने को कहते हैं जो परिवार की जरूरतों को पूरा करने के बाद बच जाता है।

मानवतावादी समाज के ये पाँच आयाम मानव लक्ष्य को कैसे सुनिश्चित करने में निम्न प्रकार से सक्षम हैं—

(i) शिक्षा-सही जीवन से सही समझ मिलती है।

शिक्षा और सही जीवन-यापन की प्रक्रिया होने से व्यक्ति में सही समझ पैदा होती है।

(ii) स्वास्थ्य-स्व-नियमन समृद्धि की ओर जाता है।

स्वास्थ्य और संयम के लिए कार्यक्रम होने से शरीर की भलाई होती है, शारीरिक सुविधाओं की आवश्यकता की पहचान होती है जो उत्पादन के साथ परिवार में समृद्धि की भावना सुनिश्चित करती है।

(iii) न्याय-संरक्षण से भय का पतन होता है और सह-अस्तित्व की प्राप्ति होती है।

विश्वास, सम्मान, आदि जैसे मूल्यों के आधार पर रिश्ते में न्याय, या रिश्ते में पारस्परिक पूर्ति सुनिश्चित करना, समाज को निर्भयता की ओर ले जाता है, जबकि प्रकृति का संरक्षण-संवर्धन, संरक्षण और सही उपयोग के माध्यम से प्रकृति में सह-अस्तित्व की ओर जाता है।

(iv) उत्पादन-कार्य समृद्धि और सह-अस्तित्व की ओर जाता है।

उत्पादन और कार्य भौतिक सुविधाओं के लिए हैं, और इससे परिवार में समृद्धि की भावना पैदा होती है। उत्पादन प्रकृति के साथ सद्भाव में किया जाता है, और इसलिए, यह प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व की ओर भी ले जाता है।

(v) विनिमय-भंडारण से समृद्धि और निर्भीकता आती है।

जब हम पारस्परिक पूर्ति के लिए भण्डारण और विनिमय करते हैं न कि शोषण के लिए, तो इससे समाज मे निडरता (विश्वास) पैदा होता है।

Scanned with Cam

प्रश्न 9. व्यापक मानव लक्ष्य से आपका क्या अभिप्राय है? के बारे में बताएँ। यह जीवन में आपके लक्ष्य से कैसे संबंधित है?

उत्तर—समाज में सभी मनुष्यों की भूल आकांक्षाओं की पूर्ति को सुविधाजनक बनाने के लिए जो लक्ष्य तय किये गये हैं उन्हें व्यापक मानव लक्ष्य कहा गया है। इसके अनुसार—

प्रत्येक व्यक्ति में	परिवार में	समाज में	प्रकृति में
↓	↓	↓	↓
सही समझ व सही भावनाएँ	समृद्धि	विश्वास (निडरता)	सहअस्तित्व

(i) जब किसी के पास सही समझ नहीं होती है, तो व्यक्ति परेशान रहता है और एक तरीके से कार्य भी करता है ताकि अन्य मनुष्यों के साथ-साथ बाकी प्रकृति के साथ भी वैमनस्य पैदा हो। अत: सही समझ का होना आवश्यक है।

(ii) परिवार में समृद्धि का मतलब है कि परिवार अपनी आवश्यकताओं की पहचान करने में सक्षम है और अपनी आवश्यकताओं से अधिक उत्पादन/प्राप्त करने में सक्षम है।

(iii) समाज में विश्वास का अर्थ है समाज का प्रत्येक सदस्य अन्य सभी से संबंधित महसूस करता है और इसलिए विश्वास और निर्भीकता है।

(iv) प्रकृति में सह-अस्तित्व का अर्थ है प्रकृति में मानव सहित सभी संस्थाओं के बीच एक संबंध और पूरकता है।

Scanned with Cam